मोह, लोभ, हिंसा से अंधायुग में बदल गया द्वापर

बरेली | वरिष्ठ संवाददाता

अमावस के कोहरे में जब सत्य खोने लगे, मोह जब आसक्ति में बदल जाए, मर्यादाएं तार तार होकर टूटने लगें। नैतिकता जब सिर्फ दूसरों के उपदेश की बात हो जाए, तब द्वापर के बाद शुरू होता है अंधायुग। इन्हीं भावनाओं को समेटे महाभारत युद्ध के 17वें दिन के बाद का मंचन एसआरएमएस रिद्धिमा में हुआ। इसमें सत्य की मर्यादा को पुनः स्थापित करने और अंधेयुग से निकलने का संदेश दिया गया।

अंकुश कुकरेती के निर्देशन में धर्मवीर भारती के नाटक अंधायुग में कुरुक्षेत्र में 17वें दिन के युद्ध के बाद युद्ध का हाल जानने के लिए धृतराष्ट्र और गांधारी संजय का इंतजार करते हैं। उधर युद्ध में पिता की मौत के बाद प्रतिहिंसा में झुलस रहे अश्वत्थामा ने सो रहे पांडव सेनापति और पिता द्रोण की हत्या करने वाले धृष्टद्युम्न को मार, पांडव समझ कर उनके पुत्रों को भी सोते समय हत्या कर देता है। श्रीकृष्ण कहते हैं, जब-जब मनुष्य सत्य की मर्यादा तोड़ेगा, लोभ में अंधा होकर प्रतिहिंसा में डूबेगा उसके साथ ऐसा ही होता है। नाटक में अश्वत्थामा की भूमिका अजय चौहान, धृतराष्ट्र की भूमिका आशीष कुमार, गांधारी की भूमिका स्तुति ने निभाई। चेयरमैन देवमूर्ति, आशा मूर्ति, आदित्य मूर्ति मौजूद रहे।

एसआरएमएस रिद्धिमा में नाटक का मंचन करते कलाकार।